Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

विश्व पटल पर हिंदी

डॉ. कृष्णा कदम
हिंदी विभाग,
अंकुशराव टोपे महाविद्यालय,
जालना. (महा.)

आज जमाना **वैश्वीकरण**, बाजारवाद और विज्ञापन का है। उसी तरह **उपभोक्तावाद** का भी है। ऐसे युग में व्यक्ति केवल एक ग्राहक है। जिस प्रकार हर व्यक्ति के लिए जीविका हेतु कोई ना कोई चीज खरीदनी पड़ती है। उसी तरह व्यवहारिक जीवन में कामकाज, व्यवसाय, नौकरी आदि क्षेत्र में काम करने के लिए भाषा सीखनी पड़ती है। भाषा के बिना कोई भी व्यक्ति ना अच्छी तरह से बोल सकता है, ना अच्छी तरह से कोई व्यवहार कर सकता है। भाषा बातचीत और **वार्तालाप** का सशक्त माध्यम है। भाषा निरंतर **विकसित** होती है। परंतु आज विश्व में शारीरिक गुलामी की तरह **भाषिक** गुलाम बनाने की कूटनीति भी वैश्वीकरण के **सूत्रधारों** द्वारा की जा रही है। उन्हें सारे विश्व को ग्लोबल गांव और अंग्रेजी को ग्लोबल भाषा बनाना है। इसके कुठाराघात से भारतीय संस्कृति और भाषाएं नष्ट होने का डर है। भारतेंदु जी ने 'निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल' कहकर देसी भाषा की उपयोगिता और महत्ता को देश विकास का साधन कहा था। उसी तरह कुमार अंबुज भी विश्व संस्कृति संकट के संदर्भ में अपनी कविता में कहते हैं, 'वे चाहते हैं विस्मृत कर दूं मैं अपना **जन्मस्थान**, अपनी भाषा/ भूल जाऊँ अपनी नदी का नाम और उसका संगीत।' इसलिए हमें हमारी संस्कृति, कला, धर्म, भाषा, इतिहास, साहित्य को उजाड़ने वालों से हमें दो-दो हाथ करने होंगे। हमें आज भारत की राजभाषा तथा **राष्ट्रभाषा** हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने हेतु प्रयास करने होंगे।

हिंदी हमारे देश की **प्रमुख** भाषा है। लगभग दस राज्यों की हिंदी मातृभाषा है। देश की अधिकतम जनता हिंदी भाषा समझती है और बोलती भी है। इसलिए आजादी के दो वर्ष उपरांत 14 **सितंबर** 1949 को हमारे देश की सरकार ने संघ की राजभाषा **हिंदी** को चुना। तब से हम हिंदुस्तान में हिंदी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए अनेक **सारी** संस्थाएं काम करती है परंतु हमारा उद्देश्य हर साल हिंदी दिवस मना कर एक औपचारिकता भर पूरा करना **नहीं** होना चाहिए। हमें अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को उन्नति, रोजगार और पेट की भाषा होने का सबूत देना होगा। रामशरण जोशी के शब्दों में, "भाषा वही जीवित रहती है **जिसमें** समकालीन चुनौतियों का सामना करने और वांछित **रिस्पांस** देने की सामर्थ्य हो। उसमें आधुनिक सुविधाओं और विमर्श को अभिव्यक्त करने की शक्ति हो।" १ हिंदी भाषा में सारे आवाहनों का सामना करने और विश्व भाषा बनने की क्षमता है। हिंदी व्यवहारिक और कार्यालयीन कामकाज की भाषा बनने की शक्ति से भरपूर है। हिंदी रोजगार की भाषा है। हिंदी भाषा सीख कर आज उसमें **नौकरी** या निजी कामकाज के अनेक अवसर खोजें जा सकते हैं। जैसे अनुवादक, साहित्यिक, आलोचक, पटकथा लेखक, संवाद लेखक अभिनेता, वार्ताहर, पत्रकार **आदि**।

हिंदी की लोकप्रियता इतनी बढ़ रही है कि आज सारी विदेशी धरती पर साहित्यिक प्रेमचंद, संत कबीर, तुकाराम जैसे कालजई महानुभाव को भी बड़े पैमाने पर पढ़ा जा रहा है। भारतीय हिंदी फिल्मों की विशेष रूप से विदेशों में क्रेज है। इस कारण हिंदी फिल्में भारत के साथ विदेशों में भी प्रदर्शित होती है। हिंदी भाषा के प्रति यह आकर्षण ही देसी विदेशी लोगों को अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान के लिए प्रेरित कर रहा है। आज भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्र हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। विदेशों के अनेक स्कूल, विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। विदेश में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में प्रवासी भारतीय लोग और रोजगार की तलाश में गए व्यापारी इनका योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। यह अपने साथ भाषा, संस्कृति, धर्म, कला, साहित्य ले गए और उनका वहां प्रचार प्रसार किया। यही वजह है कि दूसरे देशों में आज हिंदी अपनी जगह बना रही है। विश्व स्तर पर हिंदी का मारीशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना, मलेशिया, अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, चीन, श्रीलंका, सिंगापुर आदि शहरों में अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु यहां अनेक हिंदी संस्थाएं कार्यरत है। यहां से हिंदी की पत्रिकाएं निकलती है। बाजार में हिंदी भाषा का प्रयोग होता है। भारत सरकार भी विदेशी दूतावासों में नियुक्त अधिकारियों को हिंदी के प्रचार प्रसार का अधिकार सौंपती है। विदेशी छात्रों को सरकार द्वारा हिंदी पढ़ने हेतु छात्रवृत्ति दी जाती है। इसलिए आज विदेशों में हिंदी भाषा लोगों के जुबान और दिलों दिमाग पर छाई हुई है।

हिंदी को विश्व पटल पर स्थापित करने में देश के धर्म प्रचारक तथा देश के प्रधानमंत्री जी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने विदेश दौरों में अपने भाषण हिंदी में देकर हिंदी की महत्ता बढ़ाई है। उनकी यह नीति हिंदी को विश्व भाषा बनाने की सोच है। अब दूसरे राष्ट्र भी हिंदी भाषा का लोहा मान रहे हैं। यह हमारी हिंदी भाषा की मूल में स्थित समता, स्वतंत्रता, विश्वबंधुता, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता और प्रजातंत्र जैसे मूल्य हैं। विवेकानंद जी ने भी शिकागो विश्व धर्म परिषद में हिंदी में 'भाइयों और बहनों' कह हिंदी भाषा की आत्मीयता और महत्ता का परिचय दें उसकी वैश्विकता को दर्शाया था। लक्ष्मीकांत पांडेय के अनुसार, "हिंदी भाषा जन सामर्थ्य पर ही विकसित हुई है और जनभाषा और राष्ट्र की संपर्क भाषा होने के कारण ही विदेशियों द्वारा विवशता में स्वीकृत व समादृत होती आई है।" २ हिंदी भाषा को हजारों वर्षों के व्याकरण का इतिहास है। हिंदी को आधुनिक संपन्न बनाने में पचास वर्ष लगे जबकि अंग्रेजी को पांच सौ वर्ष। हिंदी वैज्ञानिक भाषा है, फिर भी हमारे देश में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व बरकरार है। हिंदी समाज, संस्कृति, इतिहास और राष्ट्र की अस्मिता की संवाहक है। अंग्रेजी शिक्षा का पागलपन हमें अपनी जड़ों से दूर ले जा रहा है। शिक्षा की जड़े अपनी समाज, संस्कृति, सभ्यता से जुड़ी होनी चाहिए। प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं, "देश की सांस्कृतिक अस्मिता और संवेदनात्मक चैतन्य भाषा में निहित होता है।" ३ इसलिए हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपनी भाषा को विकसित करें। उसे बढ़ावा दें। पर एक तरफ चमक दमक वाला इंडिया है जो अंग्रेजी में बातचीत करता है दूसरी और दीन हीन फटेहाल हिंदुस्तान है जो इंडिया होने की कोशिश अंग्रेजी बोल करना चाहता है। हिंदी की स्थिति 'घर का भेदी लंका ढाए' जैसी है। भारतीयों को हिंदी को इंग्लिश नहीं तो विदेशी धरती पर आंग्लहिंदी बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

हर व्यक्ति अपनी भाषा के अलावा दूसरी भाषा बोलने वाले व्यक्ति से प्रभावित होता है और उसके मन में यह भावना जागृत होती है कि काश मैं भी अपनी भाषा के अलावा और दूसरी भाषाएं बोल सकता तो कितना अच्छा होता। हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिंह राव को भी तेरह भाषाएं आती थी। इससे स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति को अनेक भाषा का ज्ञान होना चाहिए। वर्तमान में हिंदी भाषा ने संपर्क भाषा के रूप में विश्व मंच पर अपनी सार्थकता साबित की है। विश्व में बातचीत की दृष्टि से हिंदी का तीसरा स्थान है। भारतीय भाषा हिंदी को प्रस्थापित करने हेतु निजी भाषा में सरकारी कामकाज होने चाहिए। तथा स्कूल कॉलेजों के गुणपत्रक अपनी भाषा में होने चाहिए। सभी प्रमाणपत्र, प्रवेश फार्म पर अंग्रेजी को हटाकर हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। यह हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए जरूरी है। इसके बावजूद विज्ञान, वाणिज्य, विधि, इंजीनियरिंग आदि शाखा का माध्यम भी हिंदी होना चाहिए।

आज भाषा को बाजारवाद के हवाले किया गया है। बाजार भाषा, संस्कृति की दृष्टि से स्थानीय, देशीय, अंतर्देशीय स्तर पर प्रभाव डालता है। आज सारा विश्व एक बाजार है और भाषा उस बाजार में स्थित माल को बेचने का सशक्त माध्यम है। इसलिए एक दूसरे राष्ट्रों से कारोबार के लिए एक-दूसरे की भाषा को अवगत करना अनिवार्य हो गया है। इस कारण भी हिंदी विश्व पटल पर जरूरी हो गई है। आशियाई राष्ट्रों में भारत जागतिक महासत्ता बन कर उभर रहा है। उसी तरह भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी भी। भारत की अर्थनीति तेजी से वैश्विक हो रही है। अब विदेशों में भी लोग हिंदी की संपन्नता और श्रेष्ठता को समझ बूझ रहे हैं। विलायती राष्ट्रों में भी हिंदी चैनल प्रसारित होते हैं। विदेशी कंपनियां भी अंग्रेजी के साथ-साथ अपने माल का विज्ञापन हिंदी में कर रही है। हिंदी आज बाजार और सभ्यताओं के मध्य की संवाद भाषा बन चुकी है। हिंदी केवल बाजार ही नहीं बल्कि ज्ञान, विज्ञान, कला, शिक्षा, साहित्य के बीच संपर्क की सरल भाषा बन कर उभर रही है।

भारत एक ऐतिहासिक राष्ट्र है। इसलिए विदेशी पर्यटक भारत भ्रमण के लिए हिंदी भाषा सीख रहे हैं। अंग्रेजी भाषी लोग हिंदी को अंग्रेजी लिपि में लिख पढ़ने की कोशिश करते हैं। इससे उसका प्रचार प्रसार बढ़ रहा है। शंभूनाथ के अनुसार, "हिंदी कुछ खास राज्यों या एक जाति की ही भाषा ना होकर एक विश्व भाषा है। इसमें इतना खुलापन, सर्वग्राह्यता और विश्व बोध है कि इसे विश्व भाषा कहा जा सकता है।"४ हिंदी के प्रसार हेतु आज देश में हिंदी प्रचार सभा, हिंदी भाषा परिषद, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, साहित्य अकादमी ऐसी अनेक संस्थाएं कार्यरत है। पत्र-पत्रिका, संगोष्ठीओं के साथ विश्व हिंदी सम्मेलन की परंपरा भी हिंदी को विश्व पटल पर ले जाने में सहायक सिद्ध हुई है। वैश्वीकरण की दृष्टि से साहित्य भले ही अनुपयोगी हो किंतु व्यक्ति के लिए आज भी कला, साहित्य, संस्कृति, भाषा अनिवार्य है। हिंदी भाषा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपने आप को मजबूती से ढाल रही है। बैंक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, उद्योग, व्यवसाय, विज्ञापन में भी हिंदी का प्रभावी इस्तेमाल हो रहा है। हिंदी बोलचाल, पेट और साहित्य की ही भाषा नहीं तो आज इंटरनेट की भाषा भी बन चुकी है।

हिंदी भाषा आज केवल बोलचाल की भाषा नहीं रही है तो वह व्यवहार की भाषा भी बन चुकी है। लेन-देन की भाषा बन चुकी है। मनीषा कुलश्रेष्ठ के वक्तव्य से, "बाजार का फैलाव और विकास की इस दौड़ में लोगों का

दूसरे प्रदेशों में जाना और आम जन की भाषा को समझना एक आवश्यकता बन गई है।" ५ नतीजन हिंदी का विस्तार हो रहा है। हिंदी आज जनसंचार माध्यमों की भाषा है। इंटरनेट पर हिंदी में निजी, व्यावसायिक, साहित्यिक सामग्री मौजूद है। गूगल पर हिंदी की अनेक वेबसाइट बनी है। हिंदी की पत्र-पत्रिकाएं मौजूद है। इंटरनेट से हिंदी किताबें ऑर्डर करने पर घर बैठे मिल जाती है। हिंदी वैश्विक सभी सुविधाओं से लैस भाषा है। हिंदी सॉफ्टवेयर की अनेक कंपनियां बाजार में है। कंप्यूटर पर हिंदी भाषा के प्रभावी उपकरण मौजूद है। हिंदी में वे सभी गुण मौजूद है जो एक विश्व भाषा होने के लिए आवश्यक है।

हिंदी आज हमारे देश की राजभाषा, राष्ट्रभाषा संपर्क भाषा भले ही है किंतु आज हिंदी भाषा के सामने अनेक खतरे भी हैं; क्योंकि कई राजनेता वोट बटोरने हेतु भाषावाद को बढ़ावा देते हैं। यह अत्यंत घटिया सोच है। उन्होंने देशी भाषाओं के प्रति विरोध जताने की अपेक्षा अंग्रेजी को विरोध कर हिंदी को विश्व भाषा बनाने की वकालत करनी चाहिए। फिर भी कुछ बातें छोड़ दे तो हिंदी आज विश्व पटल पर अपनी यशस्वी पहचान बना चुकी है। हिंदी विश्व भाषा बनने की आशा सभी भारतीयों को रखनी चाहिए। इससे हमारे देश और भाषा का ही गौरव बढ़ेगा।

संदर्भ सूची :-

१) मीडिया - जुलाई/सितंबर 2007, पृ. 6
२) लक्ष्मीकांत पांडेय - हिंदी भाषा संरचना और प्रयोग, परिदृश्य से
३) समकालीन भारतीय साहित्य -जुलाई/अगस्त 2011, पृ. 9
४) मीडिया - जुलाई/सितंबर 2007, पृ.13
५) नया ज्ञानोदय - फरवरी 2008, पृ.52